कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, अक्टूबर 2024 | वर्ष 2, अंक 12, पृष्ठ 4

अच्छी हिंदी आती है तो अवसरों की कमी नहीं है: अनिल जोशी





आरएलएसी में आयोजन

- दिल्ली विवि के राम लाल आनंद महाविद्यालय में हिंदी सप्ताह के तहत हुए आयोजन
- ब्रिटेन, फिजी सहित कई देशों में हिंदी का प्रचार–प्रसार कर चुके हैं कवि अनिल जोशी
- संतोष तनेजा ने कहा, हिंदी के साथ शेष भारतीय भाषाओं को भी बढ़ावा देना चाहिए

हिंदी सप्ताह समारोह

राम लाल आनंद महाविद्यालय में हिंदी सप्ताह के उद्घाटन समारोह में शिक्षकों और विद्यार्थियों की मौजूदगी (बाएं), प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने युवाओं को हिंदी में हस्ताक्षर करने को प्रेरित किया (दाएं)।

दिव्या/अंशिका वर्मा

नई दिल्ली। हिंदी को हमें हीन भावना से देखने की जरूरत नहीं है। अपनी भाषा से हमें प्यार करना आना चाहिए। अगर हमारी भाषा नहीं होगी तो हमारी मौलिकता कहां से आएगी? यह बात 11 सितम्बर को हिंदी सप्ताह के उपलक्ष्य में दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय में आयोजित समारोह में ब्रिटेन, फिजी सहित कई देशों में हिंदी का परचम लहराने वाले और वैश्विक हिंदी परिवार न्यास के अध्यक्ष और कवि अनिल जोशी ने कही। लंबे समय तक विदेश सेवा में अपनी सेवाएं देने वाले मुख्य वक्ता अनिल जोशी ने कहा कि हिंदी तभी आगे बढ़ेगी जब हम अपनी इच्छा शक्ति से उसके लिए समय निकालेंगे।

हिंदी विभाग की समिति हिंदी साहित्य परिषद् और राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में आयोजित समारोह में महाविद्यालय के गवर्निंग बॉडी के अध्यक्ष संतोष तनेजा ने कहा कि संघ लोक सेवा आयोग में हिंदी को शामिल कराने वालों में शामिल रहे अनिल जोशी ने आपके मन में हिंदी के प्रति भावों को जानने की कोशिश की। आपके प्रश्न बहुत गहरे हैं। इससे पता चलता है कि कितना असर समाज पर पड़ रहा है। हमें जितना बढ़ावा हिंदी को देना चाहिए उतना ही बाकी भाषाओं को देना चाहिए। तकनीकी विषयों की पढ़ाई हिंदी में कराने के लिए लंबा संघर्ष करने वाले श्री तनेजा ने कहा कि आप लोग जागरुक बनिए, अपनी सोच बदलिए।

इससे पहले महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने अपनी 10वीं तक की पढ़ाई हिंदी माध्यम से करने फिर सूक्ष्म जीव विज्ञान की पढ़ाई के लिए अंग्रेजी में ढलने वाली आपबीती बताई। उन्होंने दोनों अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि महाविद्यालय अपने स्तर पर हिंदी को बढ़ावा देने का काम कर रहा है। हिंदी क्षेत्र से आने वाले विद्यार्थियों के लिए अनेक शिक्षक अनुवाद करके पाठ्य सामग्री मुहैया करा रहे हैं। महाविद्यालय का सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम हिंदी के प्रसार में लगा हुआ है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की संयोजिका प्रो. अर्चना गौड़ ने समिति के कार्यों के बारे में बताते हुए सवाल किया कि क्यों आज भी अनुवाद की स्थिति बनी हुई है, इसका मतलब यह है कि अभी बहुत कुछ करना बाकी है। हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. श्रुति आनंद ने मुख्य अतिथियों का आभार व्यक्त हुए कुछ सवाल उठाए कि हम अपनी मातृभाषा को लेकर विद्यार्थियों में एतबार नहीं पैदा कर सके कि उस भाषा के जरिए उनका भविष्य सुरक्षित है। यह बड़ी खामी रही है। इससे पहले संचालन की जिम्मेदारी निभा रहे साहित्य परिषद् के संयोजक डॉ. राजेश गौतम ने अनेक तथ्यों के जरिए देश–विदेश में हिंदी के प्रचार–प्रसार को रेखांकित किया। समारोह के बाद दूसरे सत्र में विद्यार्थियों के लिए रचनात्मक लेखन और दूसरे दिन गैर हिंदी शिक्षकों के लिए आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

सप्ताह के तीसरे दिन प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। दीपांशु ने 'तुम्हारे शहर का मौसम...' कविता सुनाकर ऑडिटोरियम को तालियों की गूंज से भर दिया। चौथे दिन प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए राजभाषा कार्यशाला और हिंदी टंकण प्रतियोगिता आयोजित हुई। राजभाषा कार्यशाला में बतौर प्रशिक्षक डॉ. राजेश गौतम ने क्रुतिदेव, मंगल, यूनिकोड जैसे फॉन्ट के इतिहास और खासियत के बारे में बताया।

हिन्दी दिवस और हिंदी सप्ताह के अन्तिम दिन विद्यार्थियों के लिए आशु भाषण प्रतियोगिता हुई। महाविद्यालय की हिंदी साहित्य परिषद् और राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने बढ़–चढ़कर की गई प्रतिभागिता के लिए आभार व्यक्त किया।

इस मौके पत्रकारिता विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार, दिल्ली विवि के एनसीसी अधिकारी प्रो. संजय कुमार शर्मा, शिक्षक डॉ. मानवेश नाथ दास, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. रोशनलाल मीणा, डॉ. एनी रे सहित कई विभागों के शिक्षक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

प्रतियोगिताओं के विजेता

- **रचनात्मक प्रतियोगिता**
  1. आस्था मिश्रा
  2. स्वीटी कुमारी
  3. प्रियांशु शुक्ला
- **आशु भाषण प्रतियोगिता**
  1. प्रो. वंदना गुप्ता
  2. डॉ. कृष्ण गोपाल त्यागी
  3. डॉ. स्वागता करमाकर
- **काव्य–पाठ प्रतियोगिता**
  1. दीपांशु
  2. संजय नांगलिया
  3. अमित शैल

  नीरज और सविनय रॉय (सांत्वना पुरस्कार)
- **आशु भाषण प्रतियोगिता**
  1. आदित्य पासवान
  2. समीर सिंह
  3. आलोक राज

लैंगिक समानता वाला समाज बनाने पर जोर : डॉ. शालिनी

खुशी चौहान

नई दिल्ली। लैंगिक समानता मतलब यह नहीं है कि पितृसत्ता को हटा कर मातृसत्ता वाला समाज बनाना है। असल में हमारा लक्ष्य समाज में लैंगिक समानता की स्थापना करना है, जहां महिलाओं, पुरुषों और ट्रांसजेंडर को बराबरी का सम्मान और दर्जा मिले। यह बात यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ एजुकेशन, जीजीएसआईपी विवि की शिक्षक और मुख्य वक्ता डॉ. शालिनी यादव ने कही।



राम लाल आनंद महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग की स्टेटक्राफ्ट सोसाइटी की ओर से आयोजित डॉ. अजय सत्पथी मेमोरियल लेक्चर के अवसर पर वक्ता सत्र का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विषय लैंगिक समानता वाला विश्व बनानाः अनिवार्यताओं पर विचार था। डॉ. शालिनी यादव ने लैंगिक समानता के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा कि यह सोचना कि ट्रांसजेंडर होना एक समस्या है, यह सोचना ही अपने में एक समस्या है। हम किसी को भी देखें तो सबसे पहले उसको इंसान के रूप में देखें। लिंग, पुरुष, महिला या अन्य हैं, यह बाद की बात है।

उन्होंने विद्यार्थियों को आंकड़ों की मदद से बताया कि पूरी दुनिया में सिर्फ एक प्रतिशत ऐसी महिलाएं हैं, जिनके पास खुद की संपत्ति है। घरेलू हिंसा सबसे बड़ा कारण है, जिसकी वजह से महिलाओं को चोट या उनकी मौत होती है। वक्तव्य के अंत में मुख्य वक्ता और विद्यार्थियों के बीच प्रश्नोत्तरी सत्र हुआ।

इससे पहले सोसाइटी की संयोजिका डॉ. निधि यादव ने मुख्य वक्ता का स्वागत किया। संचालन सोसाइटी की सदस्या साक्षी ने किया। इस दौरान सोसाइटी की उपाध्यक्ष वरोनिका गोयल सहित कई शिक्षक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

केस हंट में अनुभव, रीमा व वर्षा अव्वल

श्वेता सिंह

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के ई–सेल ने प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए केस हंट नामक कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें विद्यार्थियों को तीन सदस्यों की टीम के रूप में भाग लेना था। महाविद्यालय के 30 विद्यार्थियों ने दस टीमों के रूप में प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता का आयोजन दो स्तर पर किया गया। पहले स्तर में सभी टीमों को एक–एक केस स्टडी दी गई। उन्हें 10 मिनट में सुलझा कर एक लोकेशन तक पहुंचाना था। जो टीम सबसे पहले इन टास्क को पूरा करके वापस पहुंची, उन्हें बोनस प्वाइंट मिला।

प्रतियोगिता के दूसरे स्तर पर प्रतिभागियों को अपनी टीम के साथ निर्णायकों के सामने एक प्रस्तुति पेश करनी थी। निर्णायक के रूप में बीएमएस विभाग की डॉ. अनुभा और कॉमर्स विभाग से डॉ. राजीव उपस्थित रहे। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अनुभव, रीमा और वर्षा ने प्राप्त किया। इस दौरान बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

शिक्षक दिवस हमें फिर से विद्यार्थी बनाता है

रोहित

शिक्षक दिवस



शिक्षक दिवस समारोह का प्रो. राकेश कुमार व प्रो. श्रुति आनंद ने शुभारंभ किया।

- आरएलएसी के पत्रकारिता के विद्यार्थियों ने शिक्षक दिवस समारोह आयोजित किया
- शिक्षकों ने कहा, हम जो सिखाने लायक बन पाए उसमें गुरुओं का बड़ा योगदान है

नई दिल्ली। हम सब आप सभी विद्यार्थियों को जितना कुछ बताने लायक हुए हैं। सिखाने लायक हुए हैं। पढ़ाने लायक हुए हैं, उसमें हमारे शिक्षकों का बहुत बड़ा योगदान है। शिक्षक दिवस के अवसर पर हम उन सभी शिक्षकों को याद करते हैं, जिन्होंने हमें जिंदगी का कोई न कोई सबक सिखाया है। यह कहना है राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार का, जो हिंदी पत्रकारिता के विद्यार्थियों की ओर से आयोजित शिक्षक दिवस समारोह में विद्यार्थियों को संबोधित कर रहे थे।

हिंदी पत्रकारिता एवम् जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों ने इस आयोजन की पूरी रूपरेखा खुद से बनाई। सारी तैयारी होने के बाद सभी शिक्षकों को आमंत्रित किया कि हम लोगों ने एक छोटा सा आयोजन आपके लिया रखा है। शिक्षकों के पहुंचने पर विद्यार्थियों ने तालियों और 'हैप्पी टीचर्स डे' से स्वागत किया। सभी शिक्षकों से आग्रह किया कि केक काटकर समारोह की शुरुआत करें।

हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार और हिन्दी विभाग की प्रभारी प्रो. श्रुति आनंद ने केक काटकर सभी को शिक्षक दिवस की बधाई दी। प्रो. श्रुति आनंद ने इस विशेष दिन की सुंदर अनुभूति को रेखांकित करते हुए कहा कि यह परंपरा हमेशा बनी रहे। शिक्षक दिवस का अवसर हमें फिर से विद्यार्थी बनाता है। शिक्षकों की याद दिलाता है। यह अनुभूति बहुत अच्छी है।

हिंदी पत्रकारिता की नवागंतुक छात्रा नंदनी वार्ष्णेय ने इस मौके पर शिक्षकों को समर्पित करते हुए एक कविता सुनाई। शिक्षकों ने नंदनी के इस प्रयास की प्रशंसा की। शिक्षक दिवस समारोह में हिंदी विभाग की शिक्षिका डॉ. ऐनी रे, पत्रकारिता विभाग के शिक्षक डॉ. अटल तिवारी, डॉ. सीमा भारती, डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. निशा सिंह और रेडियो तरंग 90.0 एफएम की फरदीन सुल्तान मौजूद रहीं। विभाग के प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों ने सभी शिक्षकों का आभार व्यक्त किया।

कॉपी संपादन से लेकर क्वार्क एक्सप्रेस के पृष्ठ संपादन तक

इस वर्ष तृतीय सेमेस्टर के पाठ्यक्रम में 'संपादन' पढना था। थ्योरी के रूप में संपादन पढा। प्रैक्टिकल के लिए कागजी अभ्यास भी किया, लेकिन क्वार्क एक्सप्रेस सॉफ्टवेयर पर पृष्ठ संपादन सीखना था। संयोगवश विभागीय मासिक ई–न्यूजलेटर 'कैम्पस कनेक्ट' में कार्य करने का अवसर मिला। साथ ही मार्गदर्शक के रूप में साथ मिला विभाग के शिक्षक डॉ. अटल तिवारी का, जिनके सानिध्य में संपादन सीखा और जाना।

संपादन के साथ लेआअट खींचना, पेज मेकअप और डिजाइन सीखा। साथियों को रिपोर्ट लिखने और रिपोर्टिंग के लिए भेजना जितना सरल रहा, उससे कहीं ज्यादा खबरों को संपादित करना था। खबरों के लिए फोटो का चयन करना एक तरह से व्हाट्सएप के प्रोफाइल फोटो चयन करने जैसा था। ससमय साथियों से खबर और फोटो लेना थोड़ा कठिन काम था, लेकिन कुछ समय के लिए मित्रता को दरकिनार करना इसे आसान कर दिया। कभी–कभार साथियों की गैर मौजूदगी में आयोजन स्थल पर जाना, रिपोर्टिंग करना और मोबाइल फोन से फोटो खींचना अपने आप में एक पत्रकार का अनुभव कराता रहा। हर खबर के शीर्षक और क्रॉसर पर सन्देह बना रहता था कि इससे बेहतर और क्या हो सकता है? लेकिन घड़ी की सुई इतना सोचने के लिए समय नहीं देती। एहसास यह हुआ कि पत्रकारिता में समय का सबसे ज्यादा महत्व है।



आयुष प्रजापति

सरलता, सहजता, संपादन और समय ने कुछ सीखने लायक बनाया। यह सब करते हुए मानो ऐसा लग रहा था कि एक सिस्टम के तहत किसी मीडिया हाउस में कार्य कर रहा हूं। अंततः विभागीय शिक्षकों और अपने सभी साथियों को साधुवाद देता हूं।

कुमार प्रशांत को डॉ. राही मासूम रजा सम्मान

सोनिका

नई दिल्ली। गांधीवादी सिद्धांतों और शांति के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता के लिए पहचाने जाने वाले कुमार प्रशांत को डॉ. राही मासूम रजा सम्मान 2024 से नवाजा गया। डॉ. राही मासूम रजा साहित्य अकादमी की ओर से लखनऊ के गांधी भवन में 1 सितम्बर को आयोजित समारोह में वरिष्ठ कवि नरेश सक्सेना, अकादमी अध्यक्ष वन्दना मिश्रा और प्रो. नदीम हसनैन ने कुमार प्रशांत को सम्मान प्रदान किया।

गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष कुमार प्रशांत ने अपना जीवन अहिंसा, सद्भाव और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने में लगा दिया। वह महात्मा गांधी की शिक्षाओं को आगे बढ़ाने और विभिन्न समुदायों के बीच शांतिपूर्ण सौहार्द को बढ़ावा देने में लगे रहे। गांधीवादी विचारों पर शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित करने से लेकर समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों के उत्थान के उद्देश्य से मानवीय परियोजनाओं में सक्रिय रूप से शामिल रहे। उनके नेतृत्व में गांधी शांति प्रतिष्ठान ने सहिष्णुता, समानता और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाई है। गांधीवादी दर्शन से प्रभावित परिवार में जन्मे कुमार प्रशांत कम उम्र से ही महात्मा गांधी की शिक्षाओं की ओर आकर्षित हुए। उन्होंने प्रमुख गांधीवादी नेता जयप्रकाश नारायण के मार्गदर्शन में सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अपनी यात्रा शुरू की। जयप्रकाश के प्रभाव ने प्रशांत के दृष्टिकोण को बदलने का काम किया।



इस अनुभव ने प्रशांत में अहिंसक प्रतिरोध व सामुदायिक सशक्तीकरण के लिए गहरी प्रतिबद्धता पैदा की। गांधी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष के रूप में वह इस समय गांधी की विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। भारत सहित दुनिया भर में शांति, सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों की रक्षा के लिए प्रयासरत हैं। उनका काम आधुनिक चुनौतियों का सामना करने में गांधीवादी सिद्धांतों की स्थायी शक्ति को दिखाता है। सांप्रदायिक सद्भाव जैसे मसलों पर संवाद करने से लेकर सामाजिक बदलाव के लिए जमीनी स्तर के आंदोलनों का समर्थन करने और उनमें शामिल होने तक वह लगे रहते हैं। सत्य और अहिंसा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने उन्हें हाशिए पर रह रहे लोगों की प्रमुख आवाज बना दिया है। साथ उनके लोगों के लिए कांटा भी बना दिया, जो समाज का विभाजन और लोगों का उत्पीड़न करना चाहते हैं।

प्रशांत के काम का सबसे उल्लेखनीय पहलू सत्ता के सामने सच बोलने की उनकी निडरता है। ऐसे समय में जब असहमति की आवाजों को अक्सर दबा दिया जाता है, वह अन्याय की आलोचना में दृढ़ रहते हैं। अनेक मुकदमों और चुनौतियों का सामना करते हुए वह यह काम मजबूत ढंग से कर रहे हैं।

कुमार प्रशांत को डॉ. राही मासूम रजा सम्मान मिलना एक तरह से उनके शांति और न्याय के प्रति चलाए जा रहे अभियान व उनकी दृढ़ता को दिखाता है। उनका उदाहरण एक जागरुक समाज के लिए एक ऐसी दुनिया के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है, जहां शांति, न्याय और मानवीय गरिमा प्राथमिकता में हो।

प्रसिद्ध लेखक डॉ. राही मासूम रजा के नाम पर दिया जाने वाला यह सम्मान उन लोगों को दिया जाता है, जिन्होंने शांति, साहित्य व सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने में अपना योगदान दिया है। वरिष्ठ पत्रकार अरुण त्रिपाठी ने सम्मान समारोह में कुमार प्रशांत के जीवन, कार्यों और सामाजिक–साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डाला। इस मौके पर प्रो. रूपरेखा वर्मा, प्रो. रमेश दीक्षित, आनंदवर्धन सिंह सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

'पुरुष, महिला और ट्रांसजेंडर को समान दृष्टि से देखें'



पिछले दिनों गुरु गोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी के यूनिवर्सिटी ऑफ स्कूल एजुकेशन सेंटर में कार्यरत डॉ. शालिनी यादव राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम की मेहमान थीं। इस दौरान हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार की छात्रा खुशी चौहान ने लैंगिक समानता से जुड़ी चुनौतियों और संभावनाओं सहित अनेक बिन्दुओं पर उनसे बातचीत की। उसी बातचीत के संपादित अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए यहां पेश हैं...

लैंगिक समानता क्या है?

समानता यानी इट्स ए मेन, व्हेदर इट्स ए वुमेन ऑर व्हेदर इट्स ए ट्रांसजेंडर। अर्थात् एक आदमी, एक महिला और ट्रांसजेंडर, जिसे आप थर्ड जेंडर कहते हैं, उन सबको समान दृष्टि से देखा जाए। समानता और समता दोनों समान रूप से चलती हैं। अगर आप यह कहें कि समता के बगैर समानता आ जाएगी, वह संभव नहीं है।

लिंग अधारित शिक्षा कितना जरूरी है?

हमें यह फर्क पता हो कि साक्षरता और शिक्षा इन दोनों में जमीन आसमान का अंतर है। मुझे लिखना आना चाहिए। पढ़ना आना चाहिए तो सब ठीक है। यह साक्षरता की बात है, लेकिन जब मैं शिक्षा की बात करती हूं तो क्रिटिकल थिंकिंग डेवलप यानी तार्किक सोच को विकसित करने की बात कर रही हूं ताकि हर बच्चा यह समझ सके कि क्या सही है और क्या गलत है? जेंडर एजुकेशन राइट जिसे लिंग आधारित शिक्षा कहते हैं, यह शिक्षा आपको प्राइमरी स्कूल से शुरू करनी पड़ेगी। अगर घर में बच्चे के साथ भी कोई लिंग के आधार पर भेदभाव हो रहा है तो यह दायित्व शैक्षिक संस्थानों का है। वह उस बच्चे को एक ऐसा प्लेटफार्म दे कि वह समझ सके कि मुझे अपने आप को समान महसूस करने के लिए क्या करना पड़ेगा, इसलिए लिंग अधारित शिक्षा जरूरी है।

स्टीरियो टाइप तोड़ने के लिए क्या तरीका है?

आप पूछते हैं कि लड़का हो, कैसे रो रहे हो। लड़की हो तो तुम्हें तो खाना बनाना आना चाहिए। आप उसमें च्वॉइस नहीं देते। यह स्टीरियो टाइप्स भी समाजीकरण के जरिए ही आप सीखते हो। यह बहुत आश्चर्य की बात है कि अगर टीचर ही यह विश्वास करता है कि लिंग समानता होनी नहीं चाहिए तो यह आपके सामने कितनी बड़ी चुनौती बन जाती है। इसलिए जेंडर का अनिवार्य कोर्स होना बहुत जरूरी है। सभी विश्वविद्यालय यहां तक कि टीचिंग लर्निंग सेंटर्स, जो आपके यूनिवर्सिटीज में जेंडर सेंसिटाइजेशन यानी लिंग संवेदीकरण को एक मिशन मोड में लाने का कार्य करते हैं। आपको भी सहयोग करना पड़ेगा। इस पूरी प्रक्रिया में आपकी स्टीरियो टाइप भी टूटेंगे।

समानता और समता में क्या अंतर है?

इक्वलिटी और इक्विटी साथ चलती है यानी समानता और समता साथ चलती है। जैसे कुछ लोग कहते हैं कि आपको यह जॉब करने नहीं दूंगी या दूंगा क्योंकि आप महिला हैं। मैं आपको फाइनेंशल अकॉउन्टिग करने को नहीं दूंगी या दूंगा क्योंकि आप महिला हैं या क्योंकि आप पुरुष है। लेकिन मैं आप दोनों को समान तरीके से और समान नजर से देखूंगी। इस प्रकार जब आप समता की बात करते हो, दी डिग्री ऑफ फेयरनेस एंड जस्टिस स्पेशल इन दी डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ रीसोर्सेस। अर्थात विशेष रूप से संसाधनों के वितरण में न्याय और सच्चाई के प्रमाण की बात करते हैं। पर होता क्या है? आप मुझे इक्वल ट्रीट करते हैं लेकिन फेयर ट्रीट नहीं करते। आप मुझे जस्टिस नहीं देते। फिर तो समता गई। समता और समानता अगर साथ नहीं चली तो इनजस्टिस जहां हो रहा है वहां जेंडर जस्टिस की लड़ाई अधूरी रह जाएगी। समता वह चीज है जहां आप लिंग को ध्यान में रखकर संसाधनों का बराबर बराबर वितरण करते हैं। चाहे आप महिला हों, पुरुष हों या तीसरा जेंडर।

लैंगिक समानता को मुख्यधारा में लाने से आपका क्या अभिप्राय है?

मुख्यधारा मतलब आपका जो प्रमुख विमर्श है। यह चयनित नही है। यह कोर सब्जेक्ट बने। जेंडर जस्टिस की बात हर नुक्कड़ और कार्नर में हो। चाहे वह समाज हो, चाहे वह शैक्षणिक संस्थान हो और चाहे परिवार हो। साथ ही वह समाज यौन शिक्षा देने में हिचकिचाए नहीं। वह समाज एक रणनीति जानता हो कि लैंगिक समानता को मुख्यधारा में लाने के लिए। उसकी उन्नत्ति और प्रगति की बात करे। तब आप कह सकते हैं कि जेंडर मेन स्ट्रीमिंग एस ए स्ट्रेटजी इस वर्किंग यानी मुख्यधारा में लैंगिक समानता की रणनीति कार्य कर रही है।

एलजीबीटीक्यू पर आपकी क्या राय है?

जब आप जेंडर इकक्लिटी की बात करते है तो देखिए जो लोग हाशिए पर हैं, जो मुख्यधारा में नहीं हैं। चाहे वह महिला हो, चाहे वह ट्रांसजेंडर, दोनों सम्मान योग्य हैं। आप उनको मुख्यधारा में लाने की बात करें। लैंगिक समानता तब तक नहीं आएगी जब तक पुरुष, महिला और ट्रांसजेंडर तीनों साथ मिलकर काम न करें। लोगों में खुद की अपनी समझ हो। न केवल पुरुष और महिला बल्कि ट्रांसजेंडर लैंगिक समानता को जीत सकता है।

लैंगिक समानता में समाज का क्या रोल है?

जेंडर इक्वलिटी भी एक सामाजिक चेतना की आवश्यकता है। यह तभी आएगी जब आप सामाजिक जागरूकता की बात करेंगे। आप कोई भी नियम या कानून बना लें लेकिन जब तक सामाजिक चेतना नहीं आएगी वह कानून भी उतना काम नहीं करेगा। हम गांव और कस्बों में नहीं जाएंगे, वहां तक नहीं पहुंचेंगे, वहां पर मा. इंडसेट्स चेंज नहीं करेंगे। तो कैसे होगा! यह बहुत जरूरी है कि ग्रास रूट माइक्रो प्लानिंग यानी ग्रास रूट लेवल पर प्लान बनाएं। साथ ही जेंडर सेंसिटाइजेशन का पूरा ढांचा खाका तैयार करें। हमें सामाजिक चेतना के लिए उन नुक्कड़ में पहुंचना पड़ेगा जहां उसकी जरूरत है। तब हम कह सकते हैं कि हमने सामाजिक चेतना में अपना योगदान दिया।

लैंगिक आरक्षण क्यो है?

अक्सर ऐसा हमारे परिवेश में बोला जाता है। पर, कोशिश होती है कि ऐसी समस्या से हम कैसे बचें। हर बार आप कानून के बारे में सोचें कि हर चीज ज्यूडिशियरी सॉल्व करेगी, यह नहीं होगा। आपको आवाज तो उठानी पड़ेगी। आरक्षण इसलिए दिया जाता है क्योंकि आप उस तबके को सुरक्षित महसूस कराना चाहते हो और कोई कारण नहीं है। यह भी सामाजिक चेतना है।

हम पित्तृसत्ता के खिलाफ हैं, पुरुषों के खिलाफ नहीं हैं। हमारा शोषण होगा, हमारे अधिकार छीने जाएंगे। यह कथन किस हद तक सच है?

आप जब समान हक मांगते हो तो सामने वाले को लगता है 'ओह माई गॉड'। इसका मतलब मेरे शेयर में से जाएगा, आपके शेयर में से नहीं जाएगा। जब लैंगिक शिक्षा की बात करते हैं तो यह बहुत ज्यादा जरूरी है कि आप पुरुष और महिला के साथ ट्रांसजेंडर को भी सम्मिलित करें। इसलिए मैं कह रही हूं कि यह लड़ाई इस तरह केवल महिला समानता की नहीं है, सबकी है।

हम लैंगिक समानता को खुद से कैसे शुरु करें?

व्यक्तिगत तौर पर जब आप घर की बात करते हैं, आप पैरेंट्स की बात करते हैं तो पैरेंट्स को बायोलॉजिकल डिफरेंस का आदर करना चाहिए। जैसे आप खानपान की बात करते हैं, रहन सहन की बात करते हैं तो उसमें समानता होनी चाहिए। आप एक बच्चे के लिए अलग लगाम लगाते हैं कि तुम यह कोर्स कर सकते हो, लेकिन तुम नहीं कर सकते। यह प्रोबलेमैटिक है। यह तब तक ठीक नहीं है जब तक आप पैरेंट्स का, टीचर्स का सबका माइंडसेट चेंज नहीं करोगे। इसलिए अभी से शुरू कर देना चाहिए। चूंकि उसी तंत्र में से निकल कर टीचर आ रहा है। उसी तंत्र में से निकल कर पैरेंट्स आ रहा है, अर्थात् जैसे को तैसा।

अपने विषय से प्यार कीजिए, अलग बनने की कोशिश करते रहिए

खुशी वशिष्ठ

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय के ओरिएंटेशन के दूसरे दिन 30 अगस्त को विभागों ने अपना विभागीय ओरिएंटेशन किया। विभाग के शिक्षकों ने विद्यार्थियों को विभाग और विषय से जुड़ी जानकारी दी। ओरिएंटेशन के बाद शिक्षकों ने विद्यार्थियों को परिसर का दौरा कराया।

ओरिएंटेशन की कड़ी में हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार विभाग में नवागंतुक विद्यार्थियों का विभागाध्यक्ष प्रो. राकेश कुमार ने स्वागत किया। उन्होंने कहा कि सबसे पहले आप इस संस्थान से और इस विषय से प्यार कीजिए। विभाग टॉपर्स और गोल्ड मेडलिस्ट प्रोड्यूस करता है। हमारा उद्देश्य हिंदी भाषा में पत्रकारों को तैयार करना है। इसकी जिम्मेदारी आप पर है। इसको बनाने में अपना योगदान दें।

विभागाध्यक्ष ने नए विद्यार्थियों का शिक्षकों से परिचय कराया। शिक्षकों ने विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए विभाग और कोर्स के बारे में विस्तार से बताया। डॉ. अटल तिवारी ने कहा कि आप सौभाग्यशाली हैं कि बीजेएमसी में चुने गए। उन्होनें विभाग के प्रिंट मीडिया से जुड़ी वार्षिक, अर्द्धवार्षिक और मासिक पत्र–पत्रिका क्रमशः आरएलए समाचार, सम्भव और कैम्पस कनेक्ट के बारे में बताया। विद्यार्थियों से कहा कि रोज लिखना और रोज पढ़ना जरूरी है। पेन और डायरी के बिना नहीं रहना है। आपको रिपोर्टिंग करनी है, संपादन करना है। लेआउट खींचना है, डिजाइन करना है। आप कम से कम रोज एक अखबार, महीने में एक पत्रिका और एक किताब जरूर खरीदें और पढ़ें।

डॉ. सीमा भारती ने विभाग के अलुमनाइ की मेहनत और कार्यों के विषय में बताया। कहा कि कोई ऐसा संस्थान नहीं जहां हमारे बच्चे नहीं हैं। आपने एक ऐसा प्रोफेशन चुना है, जो कंप्लीट प्रोफेशन है। आप जितना अच्छा पढ़ेंगे, उतना अच्छा लिखेंगे और उतना ही अच्छा बोलेंगे।

विज्ञान और पर्यावरण पत्रकारिता से संबंधित सुश्री श्वेता आर्या ने विभाग की गतिविधियों, टीचिंग लर्निंग प्रोसेस, क्लासेज और एक्सट्रा करिकुलम के बारे में बताया। कहा कि यह फील्ड केवल रिपोर्टर और एंकर तक सीमित नहीं, इससे कहीं ज्यादा है। भीड़ बहुत है, कंपटीशन है। विज्ञापन, डॉक्यूमेंट्री, मीडिया रिसर्च, लेटेस्ट ट्रेंड्स जैसे नए एरिया को देखें। कोई खबर हिंदी में पढ़ रहे हैं तो उसे अंग्रेजी में भी पढ़ें। डॉ. निशा सिंह ने मीडिया हाउस विजिट, शैक्षणिक टूर, पिकनिक, गीत, संगीत, फिल्म स्क्रीनिंग के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि हर भ्रमण और विजिट के पीछे लिखने पढ़ने का उद्देश्य होता है। खूब पढ़िए और प्रैक्टिकल कीजिए। सोच बड़ी रखिए। पूरा कोर्स ही आपका प्रैक्टिकल आधारित है। आपको संतुलन करना होगा।

डॉ. प्रदीप कुमार ने पाठ्यक्रम और टाइम टेबल के विषय में बताया। उन्होंने कहा कि कॉलेज यूट्यूब चैनल स्टूडियो आरएलएसी को विभाग के बच्चे चलाते हैं। स्क्रिप्ट लिखते हैं, वीडियो शूट करते हैं, एडिट करते हैं, अपलोड करते हैं। नए बच्चों का स्टूडियो आरएलएसी में स्वागत है। अपने प्रोग्राम लाइए। डॉक्यूमेंट्री बनाइए। एंकरिंग, फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी सीखिए। तत्पश्चात विभाग ने नए विद्यार्थियों को प्रिंट मीडिया लैब, टीवी और रेडियो स्टूडियो तरंग 90.0 एफएम की विजिट कराई। रेडियो तरंग 90.0 एफएम फेसबुक, इंस्टाग्राम और स्पोटीफाई जैसे प्लेटफार्म पर भी उपलब्ध है।

हसरतें ने नवागन्तुकों में हसरत जगाई

आर्यन/नई दिल्ली। आरएलएसी की ड्रामा सोसाइटी 'हसरतें' ने 10 सितम्बर को ओरिएंटेशन कार्यक्रम किया। सोसाइटी से जुड़े लोगों ने अलग तरीके से विद्यार्थियों के सामने सोसाइटी को प्रस्तुत किया। ओरिएंटेशन के पहले चरण में नुक्कड नाटक 'ये मैं ही हूं' करके विद्यार्थियों को एकत्रित किया गया। दूसरे चरण में काफ्का की लिखी कहानी 'हंगर आर्टिस्ट' से प्रेरित नाटक खेला गया। समिति अध्यक्ष लक्ष्य पुंदिर समेत बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे। संयोजक प्रो. क्षमा शर्मा भी उपस्थित रहीं।

एनएसएस का आदर्श पूरा करते हैं विद्यार्थी

राहुल/नई दिल्ली। एनएसएस ने 18 सितम्बर को ओरिएंटेशन में महाविद्यालय में आए नए विद्यार्थियों को एनएसएस के महत्व व उसकी गतिविधियों से अवगत कराया। एनएसएस संयोजक डॉ. अनुराग शर्मा ने विद्यार्थियों को समाज के प्रति जुनून और एनएसएस के महत्व को समझने को कहा। कहा कि यह 'मैं नहीं बल्कि आप हैं', जो यह दर्शाता है कि विद्यार्थी एनएसएस के आदर्श वाक्य को पूरी लगन और दिल से पूरा करते हैं। डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से एनएसएस ने गत वर्ष के शैक्षणिक दौर को दिखाया।

यूबिक्यूट्स समिति का दस्तक ओरिएंटेशन

स्मृति/नई दिल्ली। आरएलएसी के अंग्रेजी विभाग के यूबिक्यूटस : दि इंग्लिश लिटरेरी सोसाइटी ने दस्तक'24 ओरिएंटेशन में नवागंतुक विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए सोसाइटी के अतीत से वर्तमान तक के सफर को साझा किया। सोसाइटी के उद्देश्य और लक्ष्य के बारे में बताया। सोसाइटी संयोजिका डॉ. मीनाक्षी ने कहा कि यह एक ऐसा मंच है, जो साहित्य पर विचार विमर्श करने का अवसर देता है। इससे पहले एक गेम गॉथिक टाबू हुआ, जो मनोरंजन और गतिविधियों से भरी गाथिक कहानियां पर केन्द्रित था।

सोसाइटी का भविष्य विद्यार्थी तय करेंगे

जया सिंह/नई दिल्ली। आरएलएसी के अर्थशास्त्र विभाग की सोसाइटी के 12 सितम्बर को हुए ओरिएंटेशन में सोसाइटी संयोजिका मेघा यादव ने सदस्यों से कहा कि समिति का भविष्य आप तय करेंगे। समिति में सह–सचिव और सदस्यों की भर्ती करनी है। भर्ती के लिए द्वितीय वर्ष का साथ और तृतीय वर्ष के सदस्यों से सलाह ली जाएगी। इससे पहले ओरिएंटेशन की शुरुआत शिक्षकों और समिति के सदस्यों के परिचय से हुई। इस दौरान प्रभारी शिक्षक डॉ. देबाश्री दास, विभागाध्यक्ष डॉ. सुनैना यादव व विद्यार्थी मौजूद रहे।

जीके पढ़ने वालों का कुरु में स्वागत

योगेश/नई दिल्ली। आरएलएसी में 19 सितम्बर को प्रश्नोत्तरी समिति कुरु ने ओरिएंटेशन में कार्टून, चलचित्र और सामान्य ज्ञान से संबंधित प्रश्नोत्तरी सत्र किया। विद्यार्थियों को कुरु समिति के बारे में जानकारी देना, समिति के प्रदर्शन, प्रगति की निगरानी और भागीदारी सुनिश्चित करना था। एक पीपीटी के माध्यम से विद्यार्थियों को समिति में आयोजित पूर्व के कार्यक्रमों से अवगत कराया गया। इस दौरान समिति संयोजिका रियंका जैन, सह संयोजक डॉ. बसंत मिश्रा समेत बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर एनएसएस का सामग्री दान

राहुल गुप्ता

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) ने विकसित भारत एंबेसडर क्लब के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर एक डोनेशन ड्राइव चलाई। एनएसएस संयोजक डॉ. अनुराग शर्मा ने कहा कि इस दान अभियान में 9 से 11 सितंबर तक वस्तुओं को एकत्रित किया गया। विद्यार्थी एनएसएस के कार्यकर्ताओं के पास सुबह 10 से दोपहर 2 बजे तक कॉपी, किताबें, कलम, जूते, कपड़े और स्कूल बैग जैसी कुछ उपयोगी वस्तुएं दान मे दिए। एकत्र किए गए सामान को 11 सितंबर को दिल्ली की जे.जे. कॉलोनी में जरूरतमंद बच्चों के बीच बांटा। डॉ. अनुराग का कहना है कि यह प्रयास साक्षरता को बढ़ावा देने में सहायक होगा।

आइए, वाद–विवाद सीखिए

दिव्या

नई दिल्ली। आरोह का मतलब है नीचे के क्रम से ऊपर की ओर जाना। जो यहां आते हैं, वे कुछ न कुछ सीख कर जाते हैं। वाद–विवाद करना सीखते हैं। जज्बे से बोलने का हुनर सीखते हैं। यह बात आरोह के संयोजक डॉ. रोशनलाल मीणा ने कही। राम लाल आनंद महाविद्यालय में 13 सितम्बर को आरोह हिंदी वाद विवाद समिति के ओरिएंटेशन में डॉ. रोशनलाल मीणा ने कहा कि समिति में आगामी दिनों में वाद–विवाद से जुड़ी कार्यशाला आयोजित की जाएगी।

सोसाइटी के सह–संयोजक डॉ. सुरेंद्र कुमार ने 'रख हौसला वह मंजर...' प्रेरणादायक पंक्तियों से नए विद्यार्थियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि आरोह के मंच से दिन–प्रतिदिन आपकी बुद्धि का विकास होता रहेगा। कौशल का विकास होगा। अंदर की झिझक को कम करने के लिए रोज शीशे के सामने तेज आवाज में बोलें। आप तार्किक होते जाएंगे। साथ ही हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग में पढ़ चुकी छात्रा श्रेया उत्तम का जिक्र किया। बताया कि वह समिति में रहकर बहुत से इनाम हासिल की और अब एक बड़े मुकाम पर है।

सोसाइटी के पूर्व सह–संयोजक डॉ. राजेश गौतम ने वाद विवाद में बोलने से पहले लिखने की आदत बनाने को कहा। समिति के शिक्षक सदस्य डॉ. श्यामजीत यादव ने विद्यार्थियों का स्वागत किया और उनको समिति से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। नए विद्यार्थियों के मन को टटोलने के लिए कुछ प्रश्न हुए।

समिति ने प्रश्नों का उत्तर देते हुए वाद–विवाद प्रक्रिया को समझाने का प्रयास किया। आरोह समिति की अध्यक्षा खुशी वशिष्ठ और महासचिव आदर्श प्रताप सिंह ने आरोह के बारे में बताते हुए अपना अनुभव साझा किया।

टेरेक्स की प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में दौड़े दिमागी घोड़े

दिव्या

नई दिल्ली। चंद्रयान 3 की सफलतापूर्वक लैंडिंग के बाद हर साल 23 अगस्त का दिन राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के रूप में मनाया जाने लगा है। चंद्रयान–3 के एक वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में राम लाल आनंद महाविद्यालय की जियोलॉजिकल समिति टेरेक्स ने प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता से पहले इसरो की पूरी यात्रा एक डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से दिखाई गई। तत्पश्चात प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता शुरू की गई।

इस प्रतियोगिता में बीएमएस विभाग के तृतीय वर्षीय के छात्र आलोक राज ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। विजेता को एक हजार की राशि दी गई। इस दौरान समिति की संयोजक पूजा यादव और विभागीय शिक्षक समेत तमाम विद्यार्थी मौजूद रहे।

आरएलएसी ने सिखाया योग–ध्यान का मूलमंत्र

हर्षित

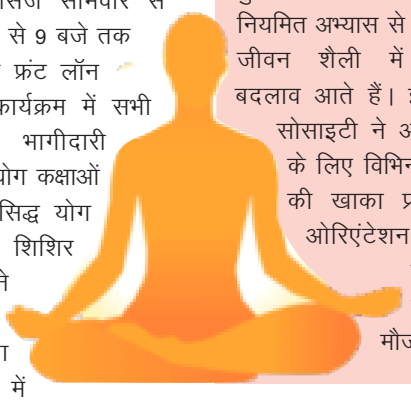
नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की निर्वाण : योग और मेडिटेशन सोसाइटी ने 'सेरेनिटी स्ट्रेच' नामक योग और ध्यान का एक महीने का विशेष आयोजन किया। विगत 1 सितम्बर से 30 सितम्बर तक यह विशेष आयोजन शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के उद्देश्य से किया गया। सोसाइटी की अध्यक्ष सुश्री शिखा वर्मा ने बताया कि आज के समय में विद्यार्थियों पर बढ़ती करियर की चिंता और मानसिक तनाव को ध्यान में रखते हुए यह पहल की गई। उन्होनें कहा कि योग और ध्यान के माध्यम से विद्यार्थियों को मानसिक शांति, शारीरिक मजबूती और भावनात्मक संतुलन प्राप्त करने में मदद मिलती है।

यह योगा क्लासेज सोमवार से शुक्रवार सुबह 8 से 9 बजे तक महाविद्यालय के फ्रंट लॉन में हुईं। इस कार्यक्रम में सभी विद्यार्थियों की भागीदारी निःशुल्क रही। योग कक्षाओं का संचालन प्रसिद्ध योग प्रशिक्षक शिशिर पोखरियाल ने किया।

उन्होंने बताया कि योग में विद्यार्थियों को योग के विभिन्न आ. सनों के साथ–साथ प्राणायाम और ध्यान की तकनीकों का अभ्यास कराया गया। सूर्य नमस्कार, ताड़ासन, वृक्षासन और श्वास नियंत्रण जैसी महत्वपूर्ण योग क्रियाओं पर विशेष ध्यान दिया गया। इन क्रियाओं के नियमित अभ्यास से विद्यार्थियों की शारीरिक ऊर्जा में सुधार होता है। वे अपनी एकाग्र क्षमता को भी बढ़ाते हैं। इसके अलावा ध्यान की तकनीकों के माध्यम से विद्यार्थियों को मानसिक शांति और तनाव प्रबंधन के उपाय सिखाए गए। नए–नए आसन और ध्यान की विधियां सिखाई गईं, जिससे विद्यार्थियों को योग के माध्यम से शारीरिक और मानसिक लाभ का अनुभव मिला। सोसाइटी से जुड़े शिक्षक डॉ. प्रीति देवी, डॉ. श्यामजीत यादव, डॉ. अनुभूति, डॉ. सुनीला ने भी आयोजन में अपनी भूमिका निभाई तो सलाहकार की जिम्मेदारी प्रो. सीमा गुप्ता की अहम रही।

योग और ध्यान का महत्व समझें, सोसाइटी से जुड़ें

नई दिल्ली। आरएलएसी की निर्वाण : योग और मेडिटेशन सोसाइटी ने अपना ओरिएंटेशन कार्यक्रम 17 सितम्बर को किया। इसका मुख्य उद्देश्य नए विद्यार्थियों को योग और ध्यान के महत्व से परिचित कराना था। सोसाइटी उपाध्यक्ष दिग्विजय आयुष ने विद्यार्थियों को योग और ध्यान के शारीरिक और मानसिक लाभों के बारे में बताया। पिछले विशेष ध्यान सत्र का अनुभव साझा करते हुए कहा कि उस सत्र ने मुझे अपने भीतर की शांति और संतुलन को बेहतर ढंग से समझने में मदद की। सोसाइटी सदस्य प्रिया ने पिछले वर्षों में आयोजित कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी, जिनमें योग शिविर, ध्यान सत्र और कार्यशाला प्रमुख थे। योग और मेडिटेशन के नियमित अभ्यास से विद्यार्थियों की जीवन शैली में सकारात्मक बदलाव आते हैं। इसके अलावा सोसाइटी ने आने वाले सत्र के लिए विभिन्न गतिविधियों की खाका प्रस्तुत किया। ओरिएंटेशन के दौरान सभी विभागों के विद्यार्थी मौजूद रहे।



हंसते मुस्कुराते रिटायर हुए उपप्राचार्य प्रो. डबास

सोनिका

नई दिल्ली। एक साथी और दोस्त के रूप में प्रो. सुभाष चन्द्र डबास ने जिस प्रकार मेरा और आरएलएसी का साथ दिया, वह शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। जीवन का संघर्ष, अच्छी आदतें और नैतिकता का पालन करना इनसे ही सीखा है। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने उपप्राचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र डबास के विदाई के मौके पर आयोजित अभिनंदन समारोह में कही। महाविद्यालय को 28 साल की सेवा देने वाले उपप्राचार्य का शिक्षक संघ ने समारोह आयोजित किया।

प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने रामचरितमानस की एक चौपाई के साथ अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए आपसी मित्रता को जाहिर किया। उन्होंने कहा कि इनका त्याग, समर्पण



प्रो. सुभाष चन्द्र डबास को प्रो. राजीव, डॉ. अरविंद, डॉ. नरेंद्र ने सम्मानित किया।

और ईमानदारी इस संस्थान को हमेशा आगे लेकर गई। हिंदी विभाग के शिक्षकों ने प्रो. डबास और अपने संबंध को बताते हुए पूरे ऑडिटोरियम को भाव विभोर कर दिया। उन्होंने बताया कि कैसे सर महाविद्यालय में सुबह सबसे पहले आ जाते हैं और शाम सबसे बाद घर जाते हैं। सुबह आकर महाविद्यालय के लॉन में भ्रमण करना, धीमी आवाज में भजन सुनना, चेहरे पर हल्की मुस्कान लिए सभी को एक नई ऊर्जा और प्रेरणा देते थे। प्रो. डबास ने इस संस्थान और शिक्षकों के प्रति अपनी भावना व्यक्त करते हुए नई पुरानी यादों का पिटारा खोल दिया। सबकी आंखें गीली कर दीं। शुरुआत से लेकर अब तक के सफर को बताया। समारोह में बहू, बेटे, पोते संग उनकी पत्नी ने भी शिरकत की। लाडली पोती को माइक मिला तब उसने अपने भाव जाहिर कर दिए। इस पर पूरा ऑडिटोरियम खिलखिला उठा। पत्नी भी बोलीं कि इनका पूरा समय यह संस्थान ही है।

हिंदी विभाग की प्रो. अर्चना गौड़ ने इन यादों को एक कविता में पिरोया, सुनाया और सबकी आंखें नम कर दीं। अन्य विभाग के शिक्षकों ने भी एक के बाद एक सर के प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। इससे पहले शिक्षक संघ ने प्रो. डबास को उपहार भेंट किया। इस दौरान शिक्षक संघ के अध्यक्ष प्रो. राजीव कुमार, उपाध्यक्ष डॉ. अरविंद, सचिव डॉ. नरेंद्र कुमार, प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार समेत सभी विभागों के शिक्षक बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

काम को आसान बनाए, वह टेक्नोलॉजी अच्छी है



युवा और प्रौद्योगिकी के पैनल डिस्कशन में नीलिमा मिश्रा, हरीश हांडे, प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता और प्रो. राकेश कुमार।

आस्था त्रिपाठी

- आरएलएसी में बेहतर एशिया के लिए युवा और प्रौद्योगिकी विषय पर पैनल डिस्कशन
- रमन मैग्सेसे पुरस्कार अवार्डी हरीश हांडे और नीलिमा मिश्रा ने दिया व्याख्यान

नई दिल्ली। टेक्नोलॉजी ने बहुत से अवसर दिए हैं। नई नौकरियां और व्यवसाय उत्पन्न किए हैं, पर सिर्फ अंग्रेजी भाषी लोगों के लिए। यह बात रमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित सेल्को के सह संस्थापक हरीश हांडे ने 5 सितम्बर को रमन मैग्सेसे पुरस्कार फाउंडेशन फिलीपींस के सहयोग से राम लाल आनंद महाविद्यालय के पाथवे सेल और हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार विभाग की तरफ से आयोजित पैनल डिस्कशन में कही।

'बेहतर एशिया के लिए युवा और प्रौद्योगिकी' विषय से जुड़े करियर में टेक्नोलोजी के प्रभाव और अवसर पर बात करते हुए हरीश हांडे ने कहा कि टेक्नोलॉजी ने अंग्रेजी और गैर अंग्रेजी भाषी लोगों को बांटने का काम किया है। टेक्नालॉजी सिर्फ कुछ ही क्षेत्रों की प्रगति में सहयोग कर रही है। नतीजा यह हो रहा कि सभी अपना–अपना काम छोड़कर उस तरफ रुख कर रहे हैं। प्रयास यह होना चाहिए कि टेक्नालॉजी से हम और भी काम आसान करने की दिशा में बढ़ें। जैसे–फसलों, खेतों और उपज की समस्या पर ध्यान दें। गांव में भी आगे बढ़ने और नौकरी के अवसर देने का प्रयास करें।

टेक्नोलॉजी के विकास को समझाते हुए कहा कि भारत की टेक्नोलॉजी में दिक्कत यह है कि पहले कोई नई टेक्नोलॉजी आती है। उससे कौन सी समस्या का समाधान किया जा सकता है, यह ढूंढा जाता है। यह दुखद बात है कि जरूरतों और चाहतों के बीच हम चाहतों पर अधिक ध्यान दे रहे हैं।

एशिया को एक दूसरे से सीखने की जरूरत है। टेक्नोलॉजी का मतलब सिर्फ सूचना प्रौद्योगिकी या एआई नहीं है। वैज्ञानिक ज्ञान का हर वह प्रयोग जो वास्तविक और व्यावहारिक कामों को आसान बनाए, वह टेक्नोलॉजी अच्छी है। भगिनी निवेदिता ग्रामीण विज्ञान निकेतन की संस्थापक और उभरते नेतृत्व के लिए रमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित नीलिमा मिश्रा थीं। उन्होंने लोगों की समस्याओं को टेक्नोलॉजी से जोड़ने के कुछ तरीके बताए। उनका कहना है कि एशिया में ग्रामीण लोग अधिक हैं। इसलिए उनके विकासशील देश के इमारत की नींव मजबूत नहीं होगी। उन्होंने विद्यार्थियों से लोगों को असल समस्या से जोड़ने और कृतज्ञता का महत्व समझने के लिए टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने के तरीके खोजने को कहा। पैनल डिस्कशन में संचालन और वक्ता दोनों की भूमिका निभा रहे हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राकेश कुमार ने समझाया कि टेक्नोलॉजी सिर्फ एक उपकरण है और हमेशा एक उपकरण ही रहेगी। टेक्नोलॉजी स्वयं एक बाधा है, जो अभी बहुत सी जगहों पर मूलभूत जरूरतें पहुंचाने में भी असफल रहा है। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीक की सही पहुंच पर जोर दिया। पैनल डिस्कशन के साथ विद्यार्थियों ने सवाल किए। पूरा विमर्श सवाल–जवाब के रूप में हुआ।

इससे पहले महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने मुख्य वक्ताओं का स्वागत करते हुए कहा कि महाविद्यालय और फाउंडेशन दोनों की दृष्टि और लक्ष्य एक ही है। इसलिए दोनों का एकीकृत होना लाभदायक है। रमन मैग्सेसे पुरस्कार फाउंडेशन की अध्यक्ष स्यूसन की तरफ से समापन भाषण देते हुए सुश्री इस्सेयी नोडालो ने लोगों को प्रेरित करना और आपस में जोड़ना ही रमन मैग्सेसे पुरस्कार फाउंडेशन का मुख्य लक्ष्य बताया। समारोह का संचालन सोनाली और दीवेजा वाधवा ने किया। इस दौरान पाथवे सेल के संयोजक डॉ. पवन शर्मा, सह संयोजक सिद्धार्थ गुप्ता, डॉ. केजी त्यागी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. अटल तिवारी, डॉ. सीमा भारती, डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. निशा सिंह सहित कई शिक्षक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

सामाजिक–राजनीतिक ढांचा व सत्ता की शक्ति दिखाती *गुलाल*

अनुराग कश्यप ने फिल्म में प्रेम, शक्ति और क्रांति को दिखाया

अंशिका

नई दिल्ली। 'हम साहित्य क्यों पढ़ते हैं? फिल्म क्यों देखते हैं? इसलिए देखते हैं ताकि अपने ज्ञान को बढ़ा सकें। मनोरंजन और शिक्षा एक–दूसरे को पूरा करते हैं। मनोरंजन के बिना सीख नहीं और सीखे बिना कोई मनोरंजन नहीं हो सकता। वर्तमान में सत्ता के संघर्ष में कठपुतली गद्दार और पीड़ित, दोनों ही पिसते हैं।' यह बातें 'गुलाल' फिल्म की स्क्रीनिंग के बाद हुए पैनल चर्चा के दौरान पैनलिस्ट डॉ. प्रज्ञा देशमुख ने कही।



राम लाल आनंद महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग की स्टेटक्रॉफ्ट समिति ने 2 सितंबर को फिल्म स्क्रीनिंग और उस पर पैनल चर्चा के साथ अपने आयोजन की शुरुआत की। इसमें राजनीति विज्ञान और अंग्रेजी विभाग के प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष के विद्यार्थी शामिल रहे। वर्ष 2009 में अनुराग कश्यप निर्देशित प्रेम, शक्ति और क्रांति को दर्शाती 'गुलाल' फिल्म विश्वविद्यालय चुनाव पर आधारित है। इस फिल्म में महाविद्यालयों में होने वाली रैगिंग से लेकर छात्र नेताओं के बीच होने वाले आक्रोश को दिखाया गया है। फिल्म सामाजिक–राजनीतिक ढांचे की गहराई और सत्ता की शक्ति को समझना सिखाती है। मुख्य पात्रों ने विद्यार्थियों की भूमिका निभाई है।

स्क्रीनिंग के बाद पैनल चर्चा में डॉ. प्रज्ञा देशमुख ने कहा कि फिल्म में नैतिकता, बहुलवाद और परंपरावाद को पात्रों के माध्यम से दिखाया गया है। ऐसी फिल्में आपको सिखाती हैं, बताती हैं और आपके भीतर सुधार लाती हैं।

इसके पहले समिति की संयोजक डॉ. निधि यादव ने पौधा देकर डॉ. प्रज्ञा देशमुख का स्वागत किया। अंत में समिति उपाध्यक्ष वरोनिका गोयल ने समारोह में शामिल सभी लोगों का धन्यवाद ज्ञापन किया। इस दौरान इतिहास विभाग की डॉ. पारुल गौड़ सहित कई शिक्षक भी मौजूद रहे। विद्यार्थियों से उनका फीडबैक भी लिया गया।

वैश्विक संबंधों पर सर्टिफिकेट कोर्स

जया सिंह

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग की समिति स्टेटक्राफ्ट ने कूटनीति और वैश्विक रणनीति विषय पर ऑनलाइन सर्टिफिकेट कोर्स का आयोजन किया। मुख्य वक्ता के रूप मे जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के प्रोफेसर डॉ. स्वर्ण सिंह रहे। यह ऑनलाइन कोर्स 13 सितंबर से 27 अक्टूबर 2024 तक चलेगा। कोर्स की कक्षाएं प्रत्येक सप्ताह शनिवार और रविवार को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर होंगी।

कोर्स से जुड़ने के लिए आरएलएसी के विद्यार्थियों को 500 रुपए और बाहर के विद्यार्थियों को एक हजार रुपए देने होंगे। दिल्ली विश्वविद्यालय के साथ–साथ अन्य विश्वविद्यालय के अध्यापक भी विषय के बारे में पढ़ाएंगे। ऑनलाइन कोर्स में समिति की संयोजिका डॉ. निधि यादव समेत पंजीकृत विद्यार्थी मौजूद रहे।

पत्रकारिता के विद्यार्थियों ने राष्ट्रपति भवन को देखा

खुशी चौहान

नई दिल्ली। हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने 18 सितंबर को विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रपति भवन का शैक्षणिक भ्रमण आयोजित किया। पर्यटक मार्गदर्शिका रेखा ने विद्यार्थियों को राष्ट्रपति भवन में भगवान बुद्ध की प्रतिमा को दिखाते हुए इसके इतिहास के बारे में बताया। रेखा ने कहा कि यह प्रतिमा सहस्रबाहु अवलोकितेश्वर के रूप में लगी हुई है। यह एक हजार बाजू वाली प्रतिमा है, जो वियतनाम की सरकार ने भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को उपहार स्वरूप भेंट की थी।

अंग्रेजी के एच आकार में बना राष्ट्रपति भवन लगभग 330 एकड़ में फैला है। इसमें 340 कमरे और हॉल हैं। राष्ट्रपति भवन के डाइनिंग हॉल से अमृत उद्यान का नजारा भी दिखा। विद्यार्थियों ने राष्ट्रपति भवन के दरबार हॉल और अशोक हॉल को निहारा।

रेखा ने बताया कि अब इसका नाम बदलकर क्रमशः 'गणतंत्र मंडप' और 'अशोक मंडप' कर दिया गया है। इसके अलावा राष्ट्रपति म्यूजियम के साथ जनजातीय दर्पण गैलरी को देखा। जहां भारत की अलग–अलग जनजातियों की संस्कृति से जुड़ी वेशभूषा, संगीत, वाद यंत्र आदि संरक्षित किए गए हैं। साथ ही गंगा, गोदावरी, सरयू, यमुना जैसी भारत की नदियों पर रखे राष्ट्रपति भवन के कमरों को देखा।

सुबह से बारिश होने के बावजूद विद्यार्थियों में राष्ट्रपति भवन को देखने की प्रबल इच्छा थी। यह विद्यार्थियों का उत्साह और कुछ सीखने की चाहत को दर्शाता है। इस दौरान विभाग की शिक्षिका डॉ. निशा सिंह व सुश्री श्वेता आर्या मौजूद रहीं।



कैम्पस कनेक्ट के सितम्बर अंक का विमोचन

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय का हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग अपना मासिक ई–न्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' निकालता है। इसके अब तक 11 अंक निकल चुके हैं। हर अंक की संपादकीय टीम अलग होती है, जो विद्यार्थियों के बीच से बनाई जाती है। सितम्बर अंक के संपादक की जिम्मेदारी हिंदी पत्रकारिता की छात्रा खुशी वशिष्ठ ने निभाई है तो उप–संपादक का दायित्व आयुष प्रजापति ने निभाया। इस अंक का विमोचन 3 अक्टूबर को महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता और हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने किया।

विमोचन संपादक व उप–संपादक ने सम्पन्न कराया। इस दौरान प्राचार्य ने दोनों से 'कैम्पस कनेक्ट' में पेश की गई सामग्री और पेज डिजाइन से जुड़े अनेक प्रश्न किए, जिसका दोनों ने जवाब दिया। प्राचार्य ने संयोजक प्रो. राकेश कुमार से यह भी पूछा कि अगला अंक कौन देख रहा है, इस पर प्रो. राकेश कुमार ने बताया कि अंक में जो उप–संपादक होता है वही अगले अंक का संपादक होता है। ऐसे में अगले अंक के संपादक की जिम्मेदारी आयुष पर है। इनके साथ उप–संपादक की जिम्मेदारी दूसरे विद्यार्थी की होगी। प्राचार्य ने अंक समय पर लाने का सुझाव दिया। साथ ही दोनों विद्यार्थियों को बधाई देते हुए इसी लगन से सीखने पर बल दिया।

प्रदर्शनी:पर्यावरण पत्रकारिता से परिचित हुए विद्यार्थी

आस्था त्रिपाठी



फोटो प्रदर्शनी में शिक्षिका श्वेता आर्या व डॉ. निशा सिंह के साथ विद्यार्थी।

- आरएलएसी के पत्रकारिता विभाग ने ऑल टाइगर रिजर्व प्रदर्शनी को निहारा
- पर्यावरण पत्रकारिता में हर तस्वीर के पीछे की कहानी को समझने का प्रयास

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के विद्यार्थियों ने 10 सितम्बर को नई दिल्ली के बीकानेर हाउस में वन्यजीव आधारित फोटोग्राफी प्रदर्शनी को निहारा। ऑल टाइगर रिजर्व नामक प्रदर्शनी में लेंस के माध्यम से बाघों और संबंधित जंगली जानवरों की जीवन शैली और व्यवहार को दिखाया गया है। प्रदर्शनी में शामिल तस्वीरें आरजू खुराना ने खींची हैं।

आरजू खुराना के पास वन्यजीव फोटोग्राफी का दस साल का अनुभव है। वह पेशे से वकील, लेकिन जुनूनी फोटोग्राफर हैं। वह पहली महिला फोटोग्राफर हैं, जिन्होंने सभी बाघ अभयारण्य को कवर किया है। वहां खींची गई तस्वीरों को प्रदर्शनी में खूबसूरती से प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शनी के बाद फोटोग्राफर आरजू खुराना के साथ विद्यार्थियों ने बातचीत की, जिसमें उन्होंने खबरों से संबंधित कई प्रश्न पूछे। क्षेत्र भ्रमण की योजना पर्यावरण पत्रकारिता की शिक्षिका सुश्री श्वेता आर्या ने बनाई, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों के लिए उनकी व्यावहारिक गतिविधि और पर्यावरण पत्रकारिता के पाठ्यक्रम से जुड़ा था।

विद्यार्थियों ने खींची गई हर तस्वीर के पीछे की कहानी को आरजू खुराना से समझने का प्रयास किया। खुराना और उनकी टीम ने एक–एक कर हर तस्वीर के बारे में बताया। पत्रकारिता विभाग की शिक्षिका डॉ. निशा सिंह भी इस शैक्षिक यात्रा का हिस्सा थीं। उनके साथ विद्यार्थियों ने प्रदर्शनी को देखकर अपने ज्ञान में इजाफा किया।

बीमारियों की थीम पर पोस्टर डिजाइनिंग

रोहित

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय में 18 सितंबर को माइक्रोबायोलॉजी विभाग ने कोविड 19, कैंसर, मलेरिया, डेंगू, मंकी पॉक्स और टीबी जैसी बीमारी पर पोस्टर डिजाइनिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया। पोस्टर ऑनलाइन सॉफ्टवेयर कैनवा पर बनाए और गूगल ड्राइव लिंक में अपलोड किए। कुल 24 विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। इस दौरान सोसाइटी संयोजिका डॉ. सुनीला हुड्डा, डॉ. निधि वर्मा समेत अलग अलग विभाग के प्रतिभागी मौजूद रहे।

संरक्षक मंडल
प्राचार्य
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता
विभागाध्यक्ष
प्रो. राकेश कुमार
परामर्शदाता
डॉ. अटल तिवारी
संपादक
आयुष प्रजापति
उपसंपादक
उत्कर्ष कुमार